End Semester Examination - 2013

Odd Semester

B.A. V Semester - Political Science

Paper - International Relations - (Part-I) - Paper-X

Paper Code :- AS-2700

Model Answer Key :- Section - A

Ans :- 1 - अरुणाचल प्रदेश, लद्दाख, 4057 किमी.

Ans :- 2 - सामूहिक सुरक्षा की अवधारणा से तात्पर्य अपनी सुरक्षा के संरक्षण के लिये आयोजित एक ऐसी व्यवस्था से है जिसमें दूसरे समान सोच वाले राष्ट्रों के साथ एक संयुक्त मोर्चे का गठन इस घोषणा के लिये किया जाता है कि 'यदि किसी भी राज्य ने इस मोर्चे के सदस्य सहयोगी-राज्य पर आक्रमण किया तो उसे बाकी राज्यों के खिलाफ आक्रमण समझा जायेगा और जिसका जवाब संयुक्त रूप से दिया जायेगा।'

Ans :- 3 - द्विपक्षीय सम्बन्धों से तात्पर्य विश्व के विभिन्न राष्ट्रों के मध्य स्थापित किये जाने वाले आर्थिक, राजनीतिक, राजनयिक, रक्षा एवं पर-राष्ट्र नीति सम्बन्धी वार्तालाप, अधिकारिक घोषणाओं एवं आपसी सहमतियों से है जिनका उद्देश्य सतत विकास तथा स्वस्थ प्रतिस्पर्धात्मक माहौल को तैयार एक अच्छा वैश्विक परिदृश्य का निर्माण करना हो। उदाहरणार्थ : भारत रूस के मध्य रक्षा संबंध, भारत - चीन के मध्य व्यापारिक एवं व्यवसायिक सम्बन्ध, भारत - अमेरिका के मध्य तकनीकि प्रगति एवं सतत विकास के संबंध।

Ans :- 4 - चीन

Ans :- 5 - 'एक सब के लिये तथा सब एक के लिये'

Ans :- 6 - संधियाँ, मध्यवर्ती राज्य, युद्ध आदि

Ans :- 7 - वर्ष 1935-

Ans :- 8 - पैडलफोर्ड, जार्ज लिंकन, स्टैनले हॉफमैन

Ans :- 9 - मार्टिन शुबिक, कार्ल ड्यूश, जान वान न्यूमैन

Ans :- 10 - बर्टेंड रसेल

Section - B

Ans :- 11 - अन्तर्राष्ट्रीय विश्व में भारत को एक उभरती हुयी शक्ति के रूप में देखने के लिये हमें निम्नांकित बिन्दुओं के अन्तर्गत विषय का अवलोकन करना होगा ;

भारत का उपनिवेशवादी इतिहास
द्वितीय विश्व युद्ध के बाद की भारत की स्थिति
भारत का उभरता स्वरूप 1990 के दशक के
वैश्वीकरण के युग में भारत से अन्य वैश्विक देशों के बढ़ते सम्बन्ध-
रक्षा एवं युद्ध एवं सैन्य क्षेत्र में भारत - रूस के बढ़ते सम्बन्ध-
भारत के तकनीकि प्रगति एवं सतत विकास की अवधारणा
मानवीय सुरक्षा तथा आतंकवाद निरोध भारत की अवधारणा
पर्यावरणीय सुरक्षा एवं जलवायु परिवर्तन सम्बन्धी नियम
भारत का 2020 का स्वप्न एवं वैश्विक परिदृश्य
निष्कर्ष

Ans :- 12 - नेहरू युग की विदेश नीति की प्रमुख चुनौतियां ;

कमजोर आर्थिक स्थिति
औपनिवेशिक शोषण की स्थिति
शरणार्थियों की समस्या
साम्प्रदायिक हिंसा तथा अल्पसंख्यकों के प्रति प्रतिशोध की भावना
जम्मू कश्मीर राज्य की समस्या
आर्थिक विकास की चुनौतियाँ
पंचवर्षीय योजनाओं पर आधारित मिश्रित अर्थव्यवस्था की स्थापना
औद्योगिक विकास के लिये पश्चिमी राष्ट्रों की मदद
उत्पादन एवं वितरण प्रणाली का नियमितीकरण
राजनीतिक स्थायित्व की समस्या
निष्कर्ष

Ans:-13 - शक्ति संतुलन की अवधारणा एक ऐसी व्यवस्था है जिसमें विभिन्न राष्ट्र अपने आपसी शक्ति संबंधों को बिना किसी बड़ी शक्ति के हस्तक्षेप के स्वतंत्रतापूर्वक संचालित करते हैं। वर्तमान परिदृश्य में हम देखें तो विभिन्न बड़ी शक्तियां जिनमें अमेरिका, रशिया, जापान, जर्मनी, इंग्लैण्ड आदि आते हैं उनके मध्य सम्बन्धों को यूरोपियन यूनियन, संयुक्त राष्ट्र संघ तथा अन्य अनेक क्षेत्रीय संगठनों के द्वारा शक्ति की स्थिति को छोटे राष्ट्रों की तरफ आकर्षित करने तथा उनके विकास में योगदान करने की प्रक्रिया अपनायी जा रही है।

साम्राज्यवादी तथा उपनिवेशवादी परंपरा के उलट अब राष्ट्रों का अनुकूलीकरण क्षेत्रीय संगठनों में अपनी बढ़ती हुयी भागीदारी को सुनिश्चित करना है। तथा शोषणकारी प्रयासों के स्थान पर सहयोग एवं समन्वय के सौहार्द्रपूर्ण वातावरण का निर्माण अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर करना प्रमुख प्राथमिकता का विषय है।

Ans:-14:- नेहरु भारत की विदेश नीति के संदर्भ में;

भारतीय विदेश नीति नेहरु युग की देन
नेहरु का व्यक्तित्व एवं नेतृत्वशीलता
भारतीय परिदृश्य एवं अनेक चुनौतियाँ
अन्य कारक एवं सांस्कृतिक समन्वय की परिस्थितियाँ
भारतीय सभ्यता एवं प्राचीन सांस्कृतिक विरासत का योगदान
भारतीय जनमानस की सहिष्णुतावादी प्रवृत्ति
समस्याजनक दृष्टिकोण के स्थान पर समाधानात्मक अवधारणा
नेहरु भारतीय विदेश नीति के जन्मदाता से अधिक स्वरूपनिर्धारणकर्ता के रूप में
निष्कर्ष

Ans :- 15 - शक्ति संतुलन के अनुसार प्रत्येक राष्ट्र यथास्थिति को बनाए रखने तथा परिवर्तित करने के लिये दूसरे राष्ट्रों की अपेक्षा शक्ति प्राप्त करने की आकांक्षा रखता है। इसके परिणामस्वरूप जिस ढांचे की आवश्यकता होती है वह शक्ति संतुलन कहलाता है और जिन नीतियों की आवश्यकता होती है उनका लक्ष्य शक्ति संतुलन को बनाए रखना होता है। शक्ति संतुलन को स्थापित करने वाले साधन अग्रलिखित हैं;

मुआवजा या क्षतिपूर्ति
हस्तक्षेप एवं युद्ध
संधियाँ
फूट डालो व शासन करो
मध्यवर्ती राज्य
शस्त्रीकरण एवं निःशस्त्रीकरण
मैत्री संधियाँ एवं प्रति मैत्री संधियाँ
विघटन एवं शासन

वर्तमान संदर्भ में आर्थिक साधन भी राष्ट्रों के मध्य शक्ति को संतुलित करने के लिये प्रयोग किये जाते हैं तथा इनके सकारात्मक परिणाम अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य में प्रतिबिंबित हो रहे हैं।

Ans :- 16 - संयुक्त राज्य अमेरिका सर्वशक्ति के रूप में;

अमेरिका एक शान्त विश्लेषणकर्ता के रूप में
द्वितीय विश्व युद्ध में अमेरिका की भूमिका
वैश्वीकरण के युग में अमेरिका का बढ़ता वर्चस्व
अमेरिका उभरती हुयी अर्थव्यवस्था का व्यापक स्वरूप
तकनीकी एवं आर्थिक प्रगति
भारत एवं चीन अमेरिका के समक्ष चुनौती के रूप में
यूरोपियन यूनियन का बढ़ता कद
अमेरिका द्वारा चीन को समर्थन : भारत पर अप्रत्यक्ष आघात
सुरक्षा संबंधी अमेरिकी सर्वोपरिता का प्रदर्शन
साम्प्रदायिक तथा नृजातीय प्रतिकोण
विश्व का भविष्य : 2050 के परिदृश्य में
निष्कर्ष

Ans:-17- निशस्त्रीकरण शस्त्रों की सीमा निश्चित करने, उन पर नियंत्रण करने तथा उन्हें घटाने का विचार है। इसका अभिप्राय विद्यमान सभी अथवा कुछ शस्त्रों को कम से कम करने अथवा नष्ट करने से है। इसके अन्तर्गत दो या दो से अधिक राज्य परस्पर समझौते के आधार पर शस्त्रों के परिसीमन नियंत्रण अथवा उन्मूलन के लिये सहमत होते हैं।

शक्ति संतुलन की प्रक्रिया में निशस्त्रीकरण की भूमिका;

राज्यों के मध्य परस्पर विवादों का शांतिपूर्ण समाधान

असुरक्षा की भावना में कमी तथा शक्ति प्रतिस्पर्धा का परिवर्तित दृष्टिकोण

द्विपक्षीय समझौतों का मार्ग प्रशस्तीकरण

सामरिक शस्त्र परिसीमन वार्तायें

वैश्विक भय के वातावरण में कमी

अल्पविकसित राष्ट्रों के मध्य अनुकूलन

उपनिवेशवाद तथा साम्राज्यवाद के भय की समाप्ति

युद्ध के अतिरिक्त एक अन्य विकल्प के रूप में

शक्ति संतुलन बदले हुये स्वरूप में

निष्कर्ष